7

पुद्गल का क्या विश्वासा...

(कविवर पण्डित नवनजी)

पुद्गल का क्या विश्वासा, जैसे पानी बीच पताशा[1]।
जैसे चमत्कार बिजली का, और इन्द्रधनुष आकाशा॥ टेक॥

एक दिन ऐसा होगा रे लोगों, जंगल होगा वासा।
इस तन पर हल चल जाएँगे और पशु चरेंगे घासा॥1॥

झूठा तन-धन, झूठा यौवन, झूठा है जग सारा।
झूठे ठाठ है दुनिया के, और झूठा है जग वासा॥2॥

इक बार श्री जिनजी का, भजले तू नाम निराला।
नवन कहे क्षण भी न भूलों, जब तक है घट में श्वासाँ[2]॥3॥

---

१. बताशा; २. श्वास